450वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 38 | सप्तम् अंक | फरवरी 2016

इस अंक में...

12 एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
22 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
31 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
37 नवीनतम सामान्य ज्ञान
44 राज्य समाचार
45 खेलकूद
49 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
55 प्रमुख नियुक्तियाँ
57 विश्व परिदृश्य
62 स्मरणीय तथ्य
68 मध्यकालीन भारत—एन.सी.ई.आर.टी. पुस्तकों का सारांश एक नए प्रारूप में (कक्षा 6 से लेकर 12 तक)
72 फोकस—नारी शक्ति : उच्च आर्थिक संवृद्धि एवं समृद्धि सम्भाव्यता की प्रतीक
76 युवा प्रतिभाएं
83 नवाचार—विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए महत्वपूर्ण लघु टिप्पणियाँ
85 उत्तर प्रदेश विशेष—उत्तर प्रदेश सरकार की विभिन्न सामाजिक-आर्थिक योजनाएं
86 बैंकिंग लेख—सरकार की पहल : भुगतान बैंक एवं क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
89 ऐतिहासिक लेख—अमीर खुसरो और उनका इतिहास लेखन
90 समसामयिक लेख—(i) सूचना का अधिकार अधिनियम का प्रभाव
100 (ii) गुलाम कश्मीर पर भारत की दावेदारी
103 संवैधानिक लेख—समान नागरिक संहिता के पेंच
104 पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रण सम्बन्धी लेख—करंज : जैव-ईंधन का अच्छा स्रोत
107 पर्यावरण लेख—जलवायु परिवर्तन पर पेरिस शिखर सम्मेलन के पहले की कवायद
110 ऊर्जा लेख—अक्षय ऊर्जा अपनाना जरूरी भी और मजबूरी भी
111 कृषि लेख—नवीनतम तकनीकों द्वारा कृषि विकास— 21वीं सदी की एक महती आवश्यकता
114 सुदूर संवेदन—भुवन: गूगल अर्थ का स्वदेशी रूप
115 कानूनी लेख—विधि-निर्णय
116 सार संग्रह
120 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान—(i) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग न्यायिक सेवा परीक्षा, 2015
128 (ii) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग राज्य सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2014
137 (iii) भारतीय खाद्य निगम असिस्टेंट ग्रेड-III टेक्निकल) परीक्षा, 2015
142 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
144 ऐच्छिक विषय (i) राजनीति विज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2014
148 (ii) अर्थशास्त्र-यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2014
155 वार्षिक रिपोर्ट 2014-15—आवास एवं शहरी गरीबी उपशमन सम्बन्धी स्कीम्स तथा प्रोग्राम्स : एक दृष्टि में
158 एनडीए सरकार की नई योजनाएं : एक सिंहावलोकन
164 तर्कशक्ति परीक्षा—बैंक ऑफ बड़ौदा जूनियर मैनेजमेंट में प्रोबेशनरी ऑफीसर्स (ग्रेड/स्केल-I) परीक्षा, 2015
170 संख्यात्मक अभियोग्यता— आई.डी.बी.आई. एक्जीक्यूटिव परीक्षा, 2015
176 क्या आप जानते हैं ?
177 अपना ज्ञान बढ़ाइए
178 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक 172
181 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—भारतीय राजव्यवस्था में राज्यपाल की भूमिका
183 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक—439 का परिणाम
184 English Language—I.B.P.S. Bank Probationary Officers (Pre.) Exam., 2015

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

एके साधे सब सधे, सब साधे सब जाय।
रहिमन मूल ही सींचे, फूले फले अघाय।।
– रहीमदास

भक्तिकालीन कवि रहीम ने किसी कार्य में मुख्य तत्व को समझने पर बल दिया है. वर्तमान जगत् में युवा कुछ भी या फिर सब कुछ सीखना चाहते हैं. इससे उनकी स्थिति "Jack-of-all-trades, master of none" की हो जाती है. इससे व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जाता है. व्यक्ति को कोई एक लक्ष्य निर्धारित कर उसी पर ध्यान देते हुए उसे सर्वोत्तम तरीके से भेदने का प्रयास करना चाहिए. यदि कोई व्यक्ति बिना कोई लक्ष्य निर्धारित किए निरुद्देश्य तरीके से चारों ओर हाथ-पैर मारता है तो उसका प्रयास और परिश्रम निरर्थक ही जाएगा. पौधे की जड़ को सींचने से ही फूल और फल प्राप्त होते हैं.

जीवन का गणित पुस्तकीय गणित से बहुत भिन्न है. पुस्तकीय गणित में एक और एक दो होते हैं, दो होने पर ताकत बढ़ जाती है, किन्तु जीवन के गणित में सदैव ऐसा ही नहीं होता है. यहाँ कई सारी विचित्रताएं भी पाई जाती हैं. यदि किसी पक्षी के दो परों को या किसी इंसान के दो पैरों को आपस में जोड़ दिया जाए, यह सोचकर कि उनकी शक्ति बढ़ जाएगी, तो वे जरा भी गति नहीं कर पाएंगे. उनकी शक्ति घट जाएगी. यहाँ दो का जोड़ सदैव शक्तिदायक ही हो, ऐसा नहीं होता. यहाँ हर दृश्य अलग-अलग है. कोई एक लक्ष्य को छोड़कर किन्हीं दो को पाने चले तो वह उस एक से भी वंचित रह जाएगा.

प्राचीन लोगों ने अपने अनुभवों को लोकोक्तियों के माध्यम से जनमानस में प्रचारित किया, जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सिखाया जाता रहा है. संस्कारों में बीजारोपित किया जाता रहा है ताकि पुराने लोगों के अनुभवों से नई पीढ़ी दिशा-निर्देश प्राप्त कर सकें. उसे अपने आपको सही रास्ते पर चलाना आसान हो जाए. ऐसी ही एक लोकोक्ति है कि–

एके साधे सब सधे,
सब साधे सब जाय।

A bird in hand is worth two in the bush.

जो प्रत्यक्ष क्षण है, मौजूदा हालात है, उसको देख-समझकर, उसका महत्व जानकर किया गया पुरुषार्थ व पराक्रम लक्ष्य की प्राप्ति कराता है, किन्तु जो लोग उपलब्ध वातावरण को छोड़कर अनुपलब्ध की कामना में, कल्पना में खोए हैं, अप्राप्त सामग्रियों से लक्ष्य संधान की आकांक्षा कर रहे हैं, वे सदा लक्ष्यच्युत रहते हैं. कहा भी गया है कि–

●●●